नईदुनिया

मिस्र के रेगिस्तान में मिला 1700 साल पुराना खजाना

18 प्राचीन मकबरों के साथ मिले सोने की जीभ वाले कंकाल

इजिप्ट

मिस्र के पश्चिमी रेगिस्तान में पुरातत्वविदों के हाथ एक बहुत बड़ी कामयाबी लगी है। दखला ओएसिस में खुदाई के दौरान चौथी सदी के एक पूरे बीजान्टिन शहर को खोज निकाला गया है, जो अपने आप में कई प्राचीन रहस्य समेटे हुए है। इस खोज के दौरान रिहायशी इमारतों के साथ-साथ एक प्राचीन चर्च, सोने के सिक्के और पुराने बर्तन भी बरामद हुए हैं। यह पूरा प्राचीन शहर उस दौर का है जब मिस्र बीजान्टिन साम्राज्य का हिस्सा हुआ करता था। इसके साथ ही अलेक्जेंड्रिया के पास मरीना अल-अलमीन में हुई खुदाई में 18 ऐसे खौफनाक और हैरान करने वाले मकबरे मिले हैं, जिनमें कंकालों के मुंह से सोने की जीभ मिली है। वहां के पर्यटन और पुरावशेष मंत्रालय ने इस असाधारण खोज को इतिहास की एक बड़ी सफलता बताया है।

पुरातत्वविदों के अनुसार, रेगिस्तान के नीचे दबे इस पुराने शहर में व्यवस्थित सड़कें बनी हुई थीं, जो आपस में मिलकर बड़े चौक और सार्वजनिक स्थल बनाती थीं। यह ऐतिहासिक स्थल न्यू वैली प्रांत में स्थित है, जो यूनेस्को की वर्ल्ड हेरिटेज लिस्ट में शामिल होने के बेहद करीब है। शहर के मुख्य हिस्से में चौथी सदी के मध्य का एक बड़ा चर्च और सुरक्षा के लिए बने दो ऊंचे वाचटावर मिले हैं। यहाँ मोटी दीवारों वाले मजबूत घर मिले हैं, जिनमें बड़े रिसेप्शन हाल और गुंबददार छतें बनी हुई थीं। इनमें से एक घर चर्च के डीकन टीसस का था, जिसे शुरुआती दौर में चर्च की तरह ही इस्तेमाल किया जाता था। खुदाई में यहां प्राचीन ओवन, रसोई घर और रोमन सम्राट कांस्टेंशियस द्वितीय (शासनकाल 337 से 361 ईस्वी) के समय के सोने के सिक्के मिले हैं। साथ ही मिट्टी के करीब 200 ऐसे टुकड़े मिले हैं, जिनका उपयोग उस दौर में व्यावसायिक लेन-देन के हिसाब-किताब के लिए किया जाता था। दूसरी तरफ, अलेक्जेंड्रिया शहर से करीब 100 किलोमीटर दूर मरीना अल-अलमीन साइट पर खोजे गए 18 मकबरों में से 11 चट्टानों को काटकर बनाए गए हैं, जो लगभग आठ मीटर गहरे हैं। बाकी 7 मकबरे चूना पत्थर से तैयार किए गए हैं। यह पूरी साइट प्राचीन ग्रीको-रोमन बंदरगाह शहर ल्यूकास्पिस का हिस्सा थी, जो दूसरी से चौथी सदी के बीच बेहद समृद्ध और मशहूर था। इस मिशन के विशेषज्ञों ने बताया कि खुदाई में 2.5 मीटर लंबा एक ग्रेनाइट का ताबूत और उसके पास प्लास्टर से बनी स्फिंक्स की मूर्ति मिली है। इस खोज में सबसे ज्यादा चौंकाने वाली बात कुछ कंकालों के मुंह में मिली सोने की जीभ है। प्राचीन मान्यताओं और अंतिम संस्कार की रस्मों के तहत मृतकों के मुंह में सोने के टुकड़े रखे जाते थे, जिसे गोल्डन टंग कहा जाता था। माना जाता था कि इससे मृतक परलोक में देवताओं से बात कर सकते थे।

न्यूज ब्रीफ

उड़ान के दौरान रायनएयर के बोइंग विमान की खिड़की टूटने से यात्री घायल, जांच जारी

एथेंस/बर्लिन। ग्रीस से जर्मनी जा रही रायनएयर के बोइंग 737 विमान की उड़ान के दौरान खिड़की टूटने की घटना सामने आई है। हादसे में खिड़की के पास बैठा एक 61 वर्षीय यात्री घायल हो गया। एयरलाइन ने घटना की पुष्टि करते हुए बताया कि विमान सुरक्षित रूप से वापस हवाई अड्डे पर उतारा गया, जबकि खिड़की टूटने के कारणों की जांच की जा रही है। मीडिया रिपोर्टों के मुताबिक, यह घटना शुक्रवार को ग्रीस के थेसालोनिकी से जर्मनी के मेमिंगेन जा रही फ्लाइट एफआर1879 में हुई, जिसका संचालन माल्टा एयर द्वारा रायनएयर के लिए किया जा रहा था। बताया जा रहा है कि टेक-आफ के कुछ ही देर बाद विमान में तकनीकी समस्या आई। कुछ मीडिया रिपोर्टों में दावा किया गया है कि इंजन से निकले मलबे का एक टुकड़ा विमान के फ्यूजलेज से टकराया और इससे केबिन की एक खिड़की क्षतिग्रस्त हो गई। रिपोर्टों के अनुसार, खिड़की के पास बैठे सर्बिया के 61 वर्षीय यात्री को तेज हवा और दबाव में बदलाव के कारण चोटें आईं। विमान के उतरने के बाद उन्हें सदमे की स्थिति में अस्पताल में भर्ती कराया गया। बताया गया है कि उन्होंने सीट बेल्ट पहन रखी थी, जिससे वे विमान के बाहर नहीं गिरे। रिपोर्टों में यह भी दावा किया गया है कि उनकी पत्नी ने उनके पैर पकड़ लिए और अन्य यात्रियों की मदद से उन्हें सुरक्षित अंदर खींच लिया गया। घटना के बाद विमान के केबिन में अफरातफरी मच गई। सोशल मीडिया पर वायरल वीडियो में क्षतिग्रस्त खिड़की दिखाई दे रही है। कुछ रिपोर्टों में यह भी कहा गया है कि केबिन का दबाव कम होने के कारण आक्सीजन मास्क स्वतः नीचे आ गए। रायनएयर ने अपने बयान में कहा कि शुक्रवार सुबह थेसालोनिकी से मेमिंगेन जा रही उड़ान टेक-आफ के कुछ ही देर बाद यात्री की खिड़की टूटने के कारण सुरक्षित रूप से थेसालोनिकी लौट आई।

1100 साल पुराने शिव मंदिर का भारत करेगा कायाकल्प

जकार्ता। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने हाल ही में मुस्लिम बहुल देश इंडोनेशिया के अपने दौरे के दौरान सदियों पुराने प्रम्बानन मंदिर का भ्रमण किया, जो इंडोनेशिया का सबसे बड़ा हिंदू मंदिर है। योग्याकार्ता शहर से करीब 17 किमी उत्तर-पूर्व में स्थित 1100 साल पुराना यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल अब भारत की सहायता से पुनर्जीवित होगा। दोनों देशों ने इस महत्वपूर्ण प्रम्बानन मंदिर परिसर के संरक्षण और जीर्णोद्धार पर काम करने के लिए आशय पत्र का आदान-प्रदान किया है, जो भारत और इंडोनेशिया की साझा सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक है। प्रधानमंत्री मोदी ने मंदिर के भव्य दृश्यों वाला वीडियो भी साझा किया, जिसे उन्होंने भव्य प्रम्बानन मंदिर! कहकर संबोधित किया। एक अन्य वीडियो में वे मंदिर में प्रार्थना करते हुए भी दिखाई दिए। संयुक्त प्रेसवार्ता में पीएम मोदी ने संरक्षण परियोजना के शुभारंभ को भारत और इंडोनेशिया के मजबूत सांस्कृतिक संबंधों का परिचायक बताया था। दसवीं शताब्दी में निर्मित, यह भगवान शिव को समर्पित सबसे बड़ा हिंदू मंदिर है। इसकी दीवारों पर रामायण महाकाव्य के दृश्यों को खूबसूरती से उकेरा गया है। मंदिर परिसर में ब्रह्मा, विष्णु और महेश को समर्पित तीन प्रमुख मंदिर हैं, साथ ही इन देवताओं के वाहनों को समर्पित तीन अन्य मंदिर भी हैं।

वेनेजुएला में आए दो भूकंपों से मरने वालों की संख्या पहुंची 4,000 के पार

काराकास। वेनेजुएला में 24 जून को आए विनाशकारी 7.2 और 7.5 तीव्रता के भूकंप के बाद मृतकों की संख्या बढ़कर 4,118 हो गई है, जबकि 16,740 से अधिक लोग घायल हुए हैं। देशभर में हजारों लोग बेघर हो गए हैं और राहत एवं बचाव अभियान लगातार जारी है। तुर्किए की समाचार एजेंसी अनाडोलू व अन्य मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक नेशनल असेंबली के प्रेसिडेंट जार्ज रोड्रिगेज ने सोशल मीडिया प्लेटफार्म एक्स पर जानकारी देते हुए बताया कि अब तक 86,794 प्रभावित परिवारों को सहायता पहुंचाई जा चुकी है। उन्होंने कहा कि बचाव दलों ने 6,462 लोगों को सुरक्षित निकाला है। भूकंप से 856 इमारतें क्षतिग्रस्त हुई हैं, जबकि 190 इमारतें पूरी तरह ढह गई हैं। राहत कार्यों के तहत अधिकारियों ने 9,766 मीट्रिक टन खाद्य सामग्री और 1.39 करोड़ लीटर से अधिक पेयजल वितरित किया है। साथ ही 29,966 लोगों को चिकित्सीय सहायता प्रदान की गई है।

अमेरिका ने ईरान को होर्मुज जलडमरूमध्य खोलने की समय-सीमा दी, ओमान वार्ता पर टिकी निगाहें

वाशिंगटन/तेहरान

अमेरिका ने ईरान से रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण होर्मुज जलडमरूमध्य को पूरी तरह जहाजों की आवाजाही के लिए खोलने और इस मार्ग से गुजरने वाले वाणिज्यिक जहाजों पर किसी भी तरह का हमला न करने की सार्वजनिक घोषणा करने की मांग की है। अमेरिकी अधिकारियों के अनुसार, वाशिंगटन को उम्मीद है कि शनिवार को ओमान में होने वाली वार्ता के बाद तेहरान इस संबंध में सकारात्मक रुख अपनाएगा।

मीडिया रिपोर्टों के मुताबिक, अमेरिका चाहता है कि ईरान स्पष्ट रूप से घोषणा करे कि होर्मुज जलडमरूमध्य के सभी नौवहन मार्ग खुले रहेंगे और वहां से गुजरने वाले जहाजों से किसी प्रकार का टोल नहीं लिया जाएगा। यह जलमार्ग वैश्विक ऊर्जा आपूर्ति के लिए बेहद महत्वपूर्ण माना जाता है, क्योंकि दुनिया के लगभग एक-चौथाई समुद्री तेल और एलएनजी (एलएनजी) व्यापार का परिवहन इसी रास्ते से होता है।

तनाव की जड़ 17 जून को हस्ताक्षरित एक समझौता ज्ञापन की अलग-अलग व्याख्याओं को लेकर उत्पन्न हुई है। अमेरिका और ईरान के बीच विवाद उस समय और बढ़ गया जब अमेरिका तथा खाड़ी देशों ने तीन वाणिज्यिक जहाजों पर हुए हमलों के लिए ईरान को जिम्मेदार ठहराया। इसके बाद दोनों देशों ने एक-दूसरे पर जवाबी हमले किए।

एक अन्य रिपोर्ट के अनुसार, एक अमेरिकी अधिकारी ने कहा, हमें उम्मीद है कि ईरान घोषणा करेगा कि होर्मुज जलडमरूमध्य के सभी चैनल खुले रहेंगे और वहां से गुजरने वाले जहाजों पर कोई टोल नहीं लगाया जाएगा।

अमेरिकी अधिकारियों का कहना है कि यदि ओमान में होने वाली वार्ता के बाद ईरान अपेक्षित रुख नहीं अपनाता है, तो उसके गंभीर परिणाम हो सकते हैं। एक अधिकारी ने चेतावनी देते हुए कहा, अगर उनका रुख ऐसा नहीं होता, तो यह उनके लिए अच्छा दिन नहीं होगा।

इस बीच, अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने सोशल मीडिया प्लेटफार्म ट्रूथ सोशल पर कहा कि वार्ता जारी रहेगी, लेकिन साथ ही उन्होंने चेतावनी दी कि युद्धविराम खत्म हो गया है।

वहीं, ईरान के विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता इस्माइल बघाई ने ट्रंप के उस दावे का खंडन किया जिसमें कहा गया था कि तेहरान ने नए दौर की वार्ता का अनुरोध किया है। उन्होंने स्पष्ट किया कि यदि अमेरिका युद्धविराम का उल्लंघन करता है, तो ईरान उसका जवाबी कार्रवाई के जरिए जवाब देगा।

ईरानी मीडिया के अनुसार, विदेश मंत्री अब्बास अरागची शनिवार को ओमान में क्षेत्रीय मध्यस्थों से मुलाकात करेंगे। वहीं, ईरानी संसद के अध्यक्ष मोहम्मद बाघेर घालीबाफ ने कहा कि तेहरान अभी भी अमेरिका पर भरोसा नहीं करता और ईरानी राष्ट्र कभी भी दबाव या दमन के आगे नहीं झुकेगा।

गौरतलब है कि, 28 फरवरी को अमेरिका-इजरायल के हमले के बाद ईरान ने अधिकांश जहाजों के लिए होर्मुज जलडमरूमध्य पर प्रतिबंध लगा दिया था। इसके बाद से तेहरान सभी जहाजों को उसके निर्देशों का पालन करने और निर्धारित समुद्री मार्गों का उपयोग करने के लिए कहता रहा है।

बीते 17 जून के समझौता ज्ञापन के तहत ईरान ने 60 दिनों तक वाणिज्यिक जहाजों की सुरक्षित आवाजाही सुनिश्चित करने के लिए अपनी ओर से हरसंभव प्रयास करने तथा भविष्य में होर्मुज जलडमरूमध्य के प्रशासन को लेकर ओमान के साथ आगे की बातचीत जारी रखने पर सहमति जताई थी।

एआई के कारण बिजली और पानी की खपत हो सकती है दोगुनी : यूएन

कैलिफोर्निया। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) विशेषज्ञों का कहना है कि एआई माडल को संचालित करने वाले विशाल डेटा सेंटरों को ठंडा रखने के लिए बड़ी मात्रा में पानी और बिजली की आवश्यकता होती है। संयुक्त राष्ट्र ने भी एआई कंपनियों से बिजली, पानी और भूमि के उपयोग का विस्तृत विवरण मांगा है। संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेष के अनुसार, यदि एआई का विस्तार इसी गति से जारी रहा तो आने वाले चार वर्षों में इससे जुड़ी बिजली और पानी की खपत लगभग दोगुनी हो सकती है। एआई आधारित सेवाओं जैसे चैटबाट या अन्य डिजिटल प्लेटफार्म पर पूछे गए प्रत्येक प्रश्न के पीछे हजारों उच्च क्षमता वाले कंप्यूटर सर्वर काम करते हैं। इन सर्वरों के लगातार सक्रिय रहने से अत्यधिक गर्मी पैदा होती है, जिसे नियंत्रित करने के लिए विशेष कूलिंग सिस्टम का उपयोग किया जाता है। विशेषज्ञ बताते हैं कि डेटा सेंटरों में पानी का उपयोग मुख्य रूप से दो तरीकों से होता है। पहला, सर्वरों को ठंडा रखने के लिए कूलिंग टावरों के माध्यम से पानी का इस्तेमाल किया जाता है, जहां पानी गर्मी सोखकर भाप बन जाता है। दूसरा, डेटा सेंटरों को बिजली उपलब्ध कराने वाले बिजलीघरों में भी शीतलन प्रक्रिया के लिए बड़ी मात्रा में पानी की आवश्यकता होती है। इस प्रकार एआई की पानी की खपत प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों रूपों में होती है। यूनिवर्सिटी आफ कैलिफोर्निया, रिवरसाइड सहित विभिन्न शोधों के अनुसार, एआई से 10 से 50 सामान्य प्रश्न पूछने पर औसतन लगभग 500 मिलीलीटर यानी आधा लीटर पानी खर्च हो सकता है। इसका अर्थ है कि एक सामान्य प्रश्न के उत्तर के लिए लगभग 10 से 50 मिलीलीटर पानी की आवश्यकता पड़ सकती है। देखने में यह मात्रा कम लगती है, लेकिन जब दुनिया भर में प्रतिदिन करोड़ों लोग एआई सेवाओं का उपयोग करते हैं तो कुल पानी की खपत लाखों-करोड़ों लीटर तक पहुंच जाती है।

'सतलुज' पर प्रतिबंध बरकरार रखने की सिफारिश

केंद्रीय मंत्री बिट्टू ने आतंकवाद के दौर की घटनाओं का किया उल्लेख

नईदुनिया ब्यूरो, लुधियाना: अभिनेता दिलजीत दोसांझ की फिल्म 'सतलुज' पर लगाया गया प्रतिबंध फिलहाल जारी रहेगा। सरकारी सूत्रों के अनुसार, फिल्म की सामग्री की जांच के लिए गठित केंद्रीय समिति ने अपनी अनुशंसा में कहा है कि इस फिल्म के सार्वजनिक प्रसारण पर लगी रोक को बरकरार रखा जाए। समिति का मानना है कि फिल्म की विषयवस्तु भारत की संप्रभुता और अखंडता से जुड़े प्रश्न उत्पन्न करती है।

फिल्म को भारत में प्रसारित किए जाने के बाद विदेशों में भी डिजिटल प्रसारण मंच के अंतरराष्ट्रीय संस्करण से हटा दिया गया है। फिल्म के निर्देशक हनी त्रेहान ने भी इसकी पुष्टि की है। यह फिल्म तीन जुलाई को प्रसारित की गई थी, लेकिन दो दिन बाद ही इसे मंच से हटा लिया गया था। उस समय केंद्र सरकार की ओर से कहा गया था कि फिल्म को केंद्रीय चलचित्र प्रमाणन बोर्ड का प्रमाणपत्र प्राप्त नहीं था।

इस बीच फिल्म को लेकर विवाद लगातार जारी है। केंद्रीय राज्य मंत्री रवनीत सिंह बिट्टू ने सामाजिक माध्यम पर एक आतंकी की तस्वीर साझा की, जिसमें वह स्वचालित रायफल लिए दिखाई दे रहा है। इसके साथ उन्होंने वर्ष 1991 की एक समाचार रिपोर्ट भी साझा की, जिसमें गुरदासपुर जिले के बहादुरपुर गांव में एक किशोरी के माता-पिता की हत्या तथा उसके अपहरण और दुष्कर्म की घटना का उल्लेख किया गया है।

रवनीत सिंह बिट्टू ने लिखा कि यह हजारों दर्दनाक घटनाओं में से केवल एक है। उन्होंने कहा कि जो लोग ऐसे आतंकियों को नायक या शहीद के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास कर रहे हैं, वे पंजाब के उन गहरे घावों को फिर से कुरेद रहे हैं, जिन्हें वहां के लोग कभी नहीं भूल सकते। उन्होंने कहा कि नई पीढ़ी को आतंकवाद के दौर की वास्तविक घटनाओं से परिचित कराना आवश्यक है।

यह फिल्म मानवाधिकार कार्यकर्ता जसवंत सिंह खालड़ा के जीवन पर आधारित बताई जाती है। पहले इसका नाम 'पंजाब 95' था, जिसे बाद में बदलकर 'सतलुज' कर दिया गया।

फिल्म हटाए जाने के बाद दिलजीत दोसांझ ने कहा था कि उन्हें फिल्म हटने का दुख नहीं है, क्योंकि यह दर्शकों तक पहुंच चुकी है। उन्होंने यह भी कहा कि एक बार कोई सामग्री इंटरनेट पर आ जाए तो उसे पूरी तरह हटाना आसान नहीं होता। वहीं, फिल्म को हटाए जाने के बाद कई पंजाबी कलाकारों ने भी इस निर्णय पर नाराजगी व्यक्त की है। गौरतलब है कि इस फिल्म को ओटीटी पर प्रदर्शित करने के 24 घंटे में ही केंद्र सरकार ने फिल्म का प्रदर्शन रोक दिया है। इस फिल्म को सेंसर बोर्ड से पास होने के बाद ओटीटी पर प्रदर्शित किया गया था, लेकिन पंजाब में आतंकवाद मामले लेकर प्रतिबंध लगाया गया है।

गाजा संघर्ष विराम लागू कराने के लिए लेबनान जाएगा अमेरिकी सैन्य दल

वाशिंगटन/बेरूत। इजराइल और हिज्बुल्लाह के बीच संघर्ष विराम समझौते को लागू करने की दिशा में अमेरिका सक्रिय भूमिका निभा सकता है। मीडिया रिपोर्टों के अनुसार, अमेरिकी सैन्य सेंट्रल कमांड (सेंटकाम) का एक प्रतिनिधिमंडल आने वाले दिनों में लेबनान की राजधानी बेरूत का दौरा कर सकता है। तुर्किए की सरकारी समाचार एजेंसी अनाडोलू ने अपनी रिपोर्ट में बताया कि दो वरिष्ठ लेबनानी अधिकारियों के हवाले से कहा गया है कि यह यात्रा अगले सप्ताह रोम में लेबनान और इजराइल के बीच प्रस्तावित तकनीकी वार्ता से पहले हो सकती है। बताया गया है कि वार्ता का मुख्य उद्देश्य 26 जून को हुए अमेरिका समर्थित फ्रेमवर्क समझौते को लागू करना होगा, जिसके तहत लेबनानी क्षेत्र से इजराइली सेना की चरणबद्ध वापसी का प्रावधान है। अमेरिकी विदेश विभाग (स्टेट डिपार्टमेंट) के एक प्रवक्ता ने पुष्टि की कि सेंटकाम तकनीकी और लाजिस्टिक स्तर पर दोनों पक्षों के साथ करीबी समन्वय बनाए हुए है। हालांकि, उन्होंने प्रतिनिधिमंडल की संभावित यात्रा पर कोई आधिकारिक टिप्पणी करने से इनकार कर दिया। प्रवक्ता ने कहा कि फ्रेमवर्क समझौता अब कार्यान्वयन के चरण में पहुंच चुका है और पहला पायलट जोन जल्द शुरू होने की उम्मीद है। साथ ही अन्य क्षेत्रों की मैपिंग और योजना पर भी काम जारी है।

सूरज में उठा खतरनाक और महा-विनाशकारी एक्स-क्लास सौर तूफान

मास्को

एक जुलाई की रात को सूरज में अब तक का सबसे खतरनाक और महा-विनाशकारी एक्स-क्लास सौर तूफान उठा है, जो अपनी शक्ति और तीव्रता के लिए जाना जाता है। विज्ञान की रेटिंग में इससे ज्यादा तबाही मचाने वाला और कोई विस्फोट हो ही नहीं सकता। सूरज की सतह पर एक के बाद एक भयानक धमाके हो रहे हैं, जिन्होंने पूरी दुनिया के अंतरिक्ष वैज्ञानिकों को चिंता में डाल दिया है। इस खौफनाक घटना के बाद से ही दुनिया भर के अंतरिक्ष वैज्ञानिकों के हाथ-पांव फूल गए हैं और पृथ्वी पर इसके पड़ने वाले जानलेवा असर को लेकर एक बड़ा अलर्ट जारी कर दिया गया है। रशियन एकेडमी आफ साइंसेज की सोलर लैबोरेट्री ने इस बात पर मुहर लगा दी है कि ये प्रचंड विस्फोट आधी रात के आस-पास रिकार्ड हुआ था। इन सौर तूफानों को उनकी ताकत और विनाशकारी क्षमता के हिसाब से ए, बी, सी, एम और एक्स कैटेगरी में बांटा जाता है। इसमें हर अगला लेवल पिछले वाले से 10 गुना ज्यादा खतरनाक होता है और इस लिस्ट में सबसे टाप पर आने वाला एक्स-क्लास ही होता है, जो सीधे तौर पर धरती को बड़ा खतरा पैदा कर सकता है। वैज्ञानिकों ने चेतावनी दी है कि जब भी सूरज में इतना बड़ा एक्स-क्लास का धमाका होता है तो उसके साथ भारी मात्रा में दहकते हुए प्लाज्मा के विशाल बादल अंतरिक्ष में तैरने लगते हैं।

चार्ज्ड पार्टिकल्स का ये जानलेवा सैलाब जब सीधे हमारी धरती के वायुमंडल से टकराएगा तो यहां एक भयानक मैग्नेटिक तूफान तबाही मचा सकता है, जिससे हमारे आधुनिक जीवन पर गंभीर असर पड़ेगा। इस तूफान का सीधा और भयावह असर ये होगा कि दुनिया भर के सैटेलाइट्स और जीपीएस काम करना बंद कर देंगे, जिससे मोबाइल नेटवर्क और इंटरनेट पल भर में ठप हो जाएगा।

यही नहीं, कई देशों के पावर ग्रिड फेल होने से पूरी दुनिया में अचानक घोर अंधेरा छा सकता है, जिसकी वजह से अरबों लोगों की जिंदगी पूरी तरह थम जाएगी, और रोजमर्रा के कामकाज ठप पड़ जाएंगे। हैरानी की बात तो ये है कि इस महा-धमाके से ठीक एक दिन पहले यानी 30 जून को भी सूरज ने अपनी आखें दिखाई थीं। उस दिन सूरज की सतह पर बैक-टू-बैक तीन बार एम-क्लास यानी दूसरे सबसे बड़े स्तर का सौर तूफान उठा था। चौबीस घंटे के भीतर सूरज का इस तरह बार-बार भड़कना साफ गवाही दे रहा है कि वह इस समय अपने सबसे खतरनाक दौर से गुजर रहा है और आने वाले समय में और भी तीव्र घटनाएं देखने को मिल सकती हैं। इसी बीच बर्मिंघम यूनिवर्सिटी के स्पेस वैज्ञानिकों ने एक और होश उड़ाने वाला खुलासा किया है।

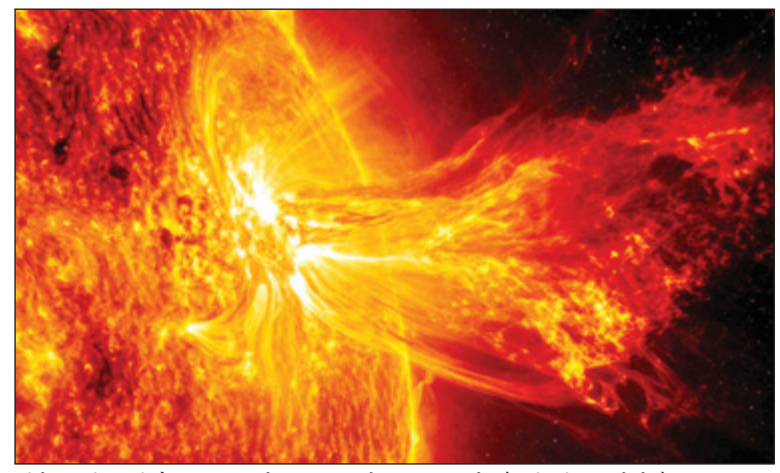

नेपाल के सुप्रीम कोर्ट ने पूर्व न्यायाधीशों और संवैधानिक पदाधिकारियों की संपत्ति जांच पर रोक लगाई

काठमांडू

नेपाल के उच्चतम न्यायालय ने पूर्व न्यायाधीशों और संवैधानिक पदाधिकारियों के संपत्ति की जांच पर अंतरिम रोक लगा दिया है। कोर्ट ने पूर्व न्यायाधीशों और संवैधानिक पदाधिकारियों को उनकी संपत्ति विवरण सौंपने के लिए मजबूर न करने का अंतरिम आदेश संपत्ति जांच आयोग के नाम जारी किया है।

उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश टेकप्रसाद ढुंगाना और श्रीकांत पौडेल की पीठ ने आदेश दिया है कि जिन व्यक्तियों पर संविधान की धारा 239 आकर्षित होती है, उनकी संपत्ति के विवरण को यथास्थिति में रखा जाए। अदालत ने आयोग के गठन के संवैधानिक औचित्य और उसके अधिकार क्षेत्र पर तीन गंभीर सवाल उठाते हुए इस मामले को पूर्ण पीठ (फुल बेंच) के समक्ष पेश करने का निर्देश दिया है।

उच्चतम न्यायालय ने पूर्व न्यायाधीशों सहित उन सभी संवैधानिक पदाधिकारियों को संपत्ति का विवरण देने के लिए मजबूर न करने का अंतरिम आदेश दिया है, जिन्हें केवल महाभियोग के माध्यम से ही पद से हटाया जा सकता है।

उच्चतम न्यायालय ने अपने अंतरिम आदेश में कहा है कि जब तक पूर्ण पीठ द्वारा अंतिम फैसला नहीं आ जाता, तब तक किसी को भी संपत्ति का विवरण पेश करने के लिए मजबूर न किया जाए। इसके साथ ही कोर्ट ने आदेश दिया है कि उनके द्वारा अब तक पेश किए गए संपत्ति के विवरण की जांच किए बिना उसे यथास्थिति में रखा जाए और किसी के भी खिलाफ कानूनी कार्रवाई की सिफारिश न की जाए।

यह आदेश पदाधिकारियों और सैन्य अधिकारियों के अलावा अन्य लोगों पर संपत्ति की जांच करने से नहीं रोकेगा। आयोग ने जुलाई मध्य तक संपत्ति का विवरण सौंपने की सूचना जारी की है, जिसके बाद संपत्ति की जांच की प्रक्रिया आगे बढ़ेगी।

उच्चतम न्यायालय ने यह निष्कर्ष निकाला है कि इनमें गंभीर और जटिल संवैधानिक तथा कानूनी प्रश्न शामिल हैं। अब गठित होने वाली पूर्ण पीठ इन सवालों पर ध्यान केंद्रित करेगी और न्यायिक व्याख्या के साथ-साथ संपत्ति जांच आयोग के गठन के औचित्य और उसके अधिकार क्षेत्र पर फैसला सुनाएगी।

आमतौर पर उच्चतम न्यायालय में पूर्ण पीठ में तीन न्यायाधीश होते हैं। यदि पूर्ण पीठ को भी लगता है कि इसमें और अधिक गंभीर या संवैधानिक व्याख्या की आवश्यकता है, तो इस मामले को पांच या उससे अधिक न्यायाधीशों की वृहद पूर्ण पीठ के समक्ष पेश किया जाएगा।